कवित्त प्रतिपाद्य — प्रस्तुत कवित्त में कवि ने बताया है कि संसार के अच्छे बुरे समस्त लीला-प्रपंचों का आधार 'पेट की आग' ही है। जिसका समाधान वे राम-रूपी घनश्याम के कृपा-जल से देखते है। उनकी समकालीन पेट की आग बुझाने वाली पानी जीवन के यथार्थ संकटों का समाधान करने वाली है, साथ ही जीवन-बाह्य-आध्यात्मिक मुक्ति देने वाली भी है।

सवैये प्रतिपाद्य :— प्रस्तुत सवैये में कवि ने भक्त की गहनता और सहनता तथा भक्त हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण करता है। कवि को किसी की जाति, धर्म और कुल से कोई लेना-देना नहीं है। कवि सब प्रकार से राम का गुलाम है और उन्हीं की भक्ति में समर्पित है।

लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप — प्रस्तुत अंश 'रामचरितमानस' के लंकाकाण्ड से लिया गया है जब लक्ष्मण शक्ति-बाण लगने से मूर्छित हो जाते है। भाई के शोक में विचलित राम का विलाप धीरे-धीरे प्रलाप में बदल जाता है जिसमें लक्ष्मण के प्रति राम के हृदय में छिपा प्रेम सामने आ जाता है। यह प्रसंग ईश्वरीय राम का पूरी तरह से मानवीकरण कर देता है। ऐसे शोक के समय हनुमान का संजीवनी बूटी लेकर आना करुण रस के बीच में वीर रस का आविर्भाव हो जाता है।

शिल्प सौंदर्य पर आधारित —
भाषा — अवधी भाषा
छंद — दोहा, चौपाई, सोरठा

रस – करुण रस तथा दोहे में वीर रस।
काल – भक्ति काल

पाठ के साथ –

1 - कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

उत्तर – तुलसीदास के समकालीन समाज में आर्थिक विषमता, गरीबी का बोलबाला था इसलिए उन्होंने अपने काव्य में इसका सजीव चित्रण किया है। श्रमिक वर्ग के पास योग्यता होते हुए भी काम का न मिलना इस समस्या को और भयावह कर देता है। इसे स्पष्ट करने के लिए तुलसीदास ने काव्य में उल्लेख भी किया है कि पेट की आग से प्रभावित लोग अपने बेटा-बेटी को भी बेचने जैसा नीच कार्य करने से भी नहीं चूकते हैं।

2 - पेट की आग का शमन (ईश्वर) राम भक्ति का मेघ ही कर सकता है - तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

उत्तर – तुलसीदास राम के अनन्य भक्त हैं। राम नाम की महिमा उनके लिए सर्वोपरि है। उनका मानना है कि पेट की आग का शमन एकमात्र उनके दीनबंधु ही कर सकते हैं। सभी कष्टों से छुटकारा दिलाने वाले करुणामयी प्रभु ही हैं।

परंतु वर्तमान समय धार्मिक न होकर आर्थिक है। धन की आवश्यकता के लिए प्रभु की कृपा नहीं बल्कि पुरुषार्थ की जरूरत है। संघर्षों के द्वारा जीवन में आने वाली विपदाओं को चुनौतियाँ दी जा सकती हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ कर्म की महत्ता को स्वीकार कर हम समस्याओं से मुक्ति पा सकते हैं।

3- तुलसी ने यह कहने की जरूरत क्यों समझी?
धूत कहौ ---------- बिगार न सोऊ।

उ- इस सवैया में काहू के बेटा से बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

उत्तर- तुलसीदास ने इन पंक्तियों के द्वारा तत्कालीन परिस्थिति की ओर संकेत किया है। उस समय में नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्थितियाँ पतन की ओर जा रही थीं। जातियों में भेदभाव विरोध उत्पन्न कर रखा था। यही कारण है कि तुलसीदास ने इन सभी विकारों से ऊपर उठकर सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ निर्लिप्त भाव से प्रभु राम का दास होना स्वीकार किया है।

4- धूत कहौ ---- वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाली तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- तुलसीदास राम के उपासक हैं। समाज की आलोचना, निंदा से परे होकर निर्भय भाव से वह राम की स्तुति करते हैं। स्वाभिमानी होकर स्वयं को राम का दास कहने पर गर्व महसूस करते हैं। जातपात सभी विकारों से दूर रहकर वे कहते हैं—
राम भक्ति आनियाले तीर। जेहि लागै सो जानै पीर।
रामकृपा के आगे तुलसीदास सांसारिक कष्टों को नगण्य मानते हैं।

6- भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नरलीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर - यह सत्य है कि तुलसी के राम अखण्ड, अविनाशी है, इसी कारण कवि ने अनेक स्थान पर उनसे नरलीला कराई किंतु यह केवल नरलीला नहीं अपितु उनके द्वारा सच्ची मानवीय अनुभूति का चित्रण है इससे हम पूर्णतः सहमत हैं।

यह विचारयोग्य है कि विपरीत परिस्थितियों में पड़ा हुआ मानव राम की तरह ही विवश देता है। जो भाई राम की सेवा हेतु माता-पिता और सांसारिक सुख-वैभव का त्याग कर देता है, वही आज मरणासन्न पड़ा है। यह विचार आते ही राम व्याकुल होकर विलाप करने लगते हैं। यह भाई के लिए उनकी सच्ची संवेदना है। उन्हें यह भी लगता है कि भाई को खोकर वह किस मुँह से अयोध्या वापस जाएँगे।

7- शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर - प्रस्तुत अवतरण द्वारा कवि ने मानवीय अनुभूति को उजागर करने का प्रयत्न किया है। कवि के अनुसार मनुष्य विपत्ति के समय इतना टूट जाता है कि वह उसके समाधान के लिए कोई प्रयत्न नहीं कर पाता लेकिन यदि वह प्रयत्न करे तो निश्चय ही उसका परिणाम सकारात्मक हो सकता है।

लक्ष्मण को मूर्च्छा के समय वहाँ का वातावरण शोकमय हो गया था। राम विलाप करने लगे जैसे कि वह एक साधारण मानव हो। ऐसे में

हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लेकर आना शोकाकुल वातावरण को परिवर्तित कर देता है। सभी हनुमान की इस वीरता के कारण खुशी से झूम उठते हैं, इसलिए कवि ने शोकग्रस्त माहौल में हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लेकर आने को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव कहा है।

Q- जैहउँ ---- --- छति नाहीं।। भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

उत्तर- भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रकार के प्रलाप वचन में तत्कालीन विषमताओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण उजागर होता है। उस समय स्त्रियों को समाज में निम्न स्तर का सम्मान प्राप्त था। तुलसीदास ने एक स्थान पर कहा भी है—

ढोल गँवार, शुद्र पशु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।

उस समय स्त्रियों के साथ क्रूर व्यवहार किया जाता था। लोग उन्हें अविश्वास की दृष्टि से देखते थे इसी कारण रावण द्वारा सीता हरण के बाद लोग यह मानने के लिए तैयार नहीं हुए कि सीता जैसी आदर्श नारी रावण के पास रहकर अपने आप को सुरक्षित रख पाई हो। लोग उन्हें संदेह की दृष्टि से देखने लगे और राम के सामने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर दी कि राम भी सीता को त्यागने के लिए बाध्य हो गए।

निष्कर्ष रूप में हम कहते है कि इस समय स्त्रियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण निम्न स्तर का था तथा पुरुषों के प्रति सम्मानजनक उच्च दृष्टिकोण था इसलिए तुलसीदास ने श्रीराम से कहलवाया भी है—

नारि हानि विसेष छति नाहीं।